सामाजिक विज्ञान-2017(A) (द्वितीय पाली)

Time : 2 Hrs. 45 Minutes] [Full Marks : 80

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश : देखें 2015 (प्रथम पाली)

ग्रुप-अ, इतिहास (20 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में सही विकल्प चुने:-

1. "रक्त एवं लौह" की नीति का अवलम्बन किसने किया? 1
   (क) मेजिनी (ख) हिटलर (ग) बिस्मार्क (घ) विलियम
2. स्पिनिंग जेनी का आविष्कार कब हुआ? 1
   (क) 1967 (ख) 1964 (ग) 1773 (क) 1775
3. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें-
   न्यूनतम मजदूरी कानून सन् .... ई० में लागू हुआ।
4. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें:
   ओड़िसा में .... में .... विद्रोह हुआ। 1
5. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें:
   कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगिकीकरण को गति प्रदान की। कैसे? 3
6. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :
   रूसी क्रांति के किन्हीं दो कारणों का वर्णन करें? 3
7. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :
   लार्ड लिंटन ने राष्ट्रीय आंदोलन को गतिमान बनाया। कैसे? 3
8. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 से 120 शब्दों में दें :
   शहरीकरण की प्रक्रिया व्यवसायी वर्ग, मध्यम वर्ग एवं मजदूर वर्ग की भूमिका की चर्चा करें। 7
   अथवा, भूमंडलीकरण के कारण आम लोगों के जीवन में आने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करें।

ग्रुप-ब, भूगोल (20 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें:-

9. मृदा का विस्तार निम्न में से कहाँ है? 1
   (क) उत्तर प्रदेश (ख) राजस्थान (घ) कर्नाटक (ग) पंजाब
10. सीमेंट उद्योग का सबसे प्रमुख कच्चा माल क्या है? 1
    (क) चूना पत्थर (ख) बॉक्साइट (घ) ग्रेनाइट (ग) लोहा अयस्क
11. सही शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :
    (i) मथुरा तेल शोधक कारखाना .... राज्य में स्थित है। 1
    (ii) भारत में कोयले का प्रमुख उत्पादक .... राज्य है। 1
12. निम्न प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में दें :
    प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण क्यों आवश्यक है? 3
13. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :
    भारतीय अर्थ-व्यवस्था में कृषि का क्या महत्त्व है? 3
14. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :
    जलोढ़ मृदा से क्या समझते हैं? इस मृदा में कौन-कौन सी फसलें उगाई जा सकती हैं? 3

15. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 से 120 शब्दों में दें :

चाय उत्पादन के प्रमुख भौगोलिक दशाओं का वर्णन करें। भारत में चाय उत्पादक तीन राज्यों के नाम लिखें।

अथवा, पूरे पृष्ठ पर भारत का एक रेखा मान चित्र बनाकर निम्नलिखित को अंकित कीजिए: 3

(क) चावल उत्पादक क्षेत्र (ख) कोलकाता

(ग) चेन्नई (घ) काली मिट्टी का क्षेत्र

(ङ) विशाखपट्टनम

अथवा, केवल नेत्रहीन छात्रों के लिए :

भारत में चाय की खेती का वर्णन करें।

ग्रुप-स, राजनीतिक शास्त्र (17 अंक)

16. भारत में हुए 1977 के आम चुनाव में किस पार्टी का बहुमत मिला था? 1

(क) काँग्रेस पार्टी को (ख) जनता पार्टी को

(घ) कम्युनिस्ट पार्टी को (ग) किसी भी पार्टी को नहीं

17. क्षेत्रवाद की भावना का एक कुपरिणाम है- 1

(क) अपने क्षेत्र से लगाव (ख) राष्ट्रहित

(घ) राष्ट्रीय एकता (ग) अलगाववाद

18. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :

धर्म निरपेक्ष राज्य से क्या समझते हैं? 2

19. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :

भारत में लोकतंत्र के भविष्य को आप किस रूप में देखते हैं? 3

20. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :

आतंकवाद लोकतंत्र की चुनौती है। कैसे? 3

21. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :

राजनीतिक दलों के प्रमुख कार्य बताएँ। 7

अथवा, क्या शिक्षा का अभाव लोकतंत्र के लिए चुनौती है? 7

ग्रुप-द, अर्थशास्त्र (17 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही विकल्प चुनें :-

22. जिस देश की राष्ट्रीय आय अधिक होती है वह देश क्या कहलाता है। 1

(क) अविकसित (ख) विकसित

(घ) अर्द्ध विकसित (ग) इनमें से कोई नहीं

23. प्रत्यक्ष कर के अंतर्गत निम्न में से कैसे शामिल किया जाता है? 1

(क) आय कर (ख) उत्पाद कर

(घ) बिक्री कर (ग) इनमें से कोई नहीं

24. निम्न प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में दें : 2

कुल घरेलू उत्पाद क्या है?

25. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें : 3

किसी व्यक्ति की बचत करने की इच्छा किन बातों से प्रभावित होती है?

26. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :

वित्तीय संस्थान से आप क्या समझते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं? 3

27. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 से 120 शब्दों में दें :
बिहार के आर्थिक पिछड़ेपन के क्या कारण हैं? वर्णन करें? 7
अथवा, उपभोक्ता के कौन-कौन से अधिकार हैं? वर्णन करें? 7

ग्रुप-इ, आपदा प्रबंधन (6 अंक)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में सही विकल्प चुने :-

28. इनमें से कौन प्राकृतिक आपदा नहीं है? 1

(क) सुनामी (ख) बाढ़
(घ) भूकम्प (ग) आतंकवाद

29. सूखा किस प्रकार की आपदा है? 1

(क) प्राकृतिक (ख) मानव जनित आपदा
(घ) सामान्य आपदा (ग) इनमें से कोई नहीं

30. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में दें :
बाढ़ के कारण एवं सुरक्षा संबंधी उपाय का वर्णन करें। 4

उत्तरमाला

1. (ग) 2. 1765 (इस प्रश्न का ऑप्शन गलत दिया है।) 3. 1948 4. 1914, खोंड

5. यह स्पष्ट है कि औद्योगिक क्रांति की स्पष्टतम अभिव्यक्ति "मशीनों का आविष्कार" है। मशीनों का निर्माण करने और उनको चलाने के लिए शक्ति के उत्पादन में कोयले और लोहे की अहम् भूमिका थी। ब्रिटेन में इन दोनों स्रोतों के प्रचुर भंडार थे। नयी टेक्नोलॉजी में कोयला और लौह उद्योग को स्थापित और विकसित किया। जैसे हंफ्री डेवी का सुरक्षा दीप (सेफ्टी लैम्प) खानों के अंदर आग लगने की समस्या को समाधानित किया। बेंजामिन हट्रामैन कोर्ट आदि ने लौह उद्योग को उन्नत किया। बेसेमर ने लोहा से इस्पात बनाने की तकनीक का इजाद किया इत्यादि। अत: मशीनों के नए आविष्कार-परिष्कार ने वाष्प ईंजन से शक्ति की समस्या को समाधानित कर दिया। जिसके फलस्वरूप परिवहन के क्षेत्र में वाष्प-इंजन चालित रेलगाड़ी का निर्माण हुआ।

ऊपर के तथ्य से यह सिद्ध होता है कि कोयला और लोहा ने आद्योगीकरण को जबर्दस्त गति प्रदान किया है।

6. रूसी क्रांति के निम्न दो कारण हैं—

(i) मजदूरों की दयनीय स्थिति—रूस में मजदूरों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। उन्हें अधिक काम करना पड़ता था परन्तु उनकी मजदूरी काफी कम थी। उनके साथ दुर्व्यवहार तथा अधिकतम शोषण किया जाता था। मजदूरों को कोई राजनीतिक अधिकार नहीं थे। अपनी माँगों के समर्थन में वे हड़ताल भी नहीं कर सकते थे और न 'मजदूर संघ' ही बना सकते थे। मार्क्स ने मजदूरों की स्थिति का चित्रण करते हुए लिखा है कि 'मजदूरों के पास अपनी बेड़ियों को खोने के अलावे और कुछ भी नहीं है।' ये मजदूर पूँजीवादी व्यवस्था एवं जारशाही की निरंकुशता को समाप्त कर "सर्वहारा वर्ग" का शासन स्थापित करना चाहते थे।

(ii) औद्योगीकरण की समस्या—रूस में अलेक्जेण्डर III के समय में औद्योगीकरण की गति में तीव्रता आई, लेकिन रूसी औद्योगीकरण पश्चिमी पूँजीवादी औद्योगीकरण से भिन्न था। यहाँ कुछ । क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उद्योगों के विकास के लिए विदेशी पूँजी पर निर्भरता बढ़ती गई। विदेशी पूँजीपति आर्थिक शोषण को बढ़ावा दे रहे थे। इसके कारण लोगों में असंतोष व्याप्त था।

7. भारतीय प्रेस अंग्रेजी राज की शोषणकारी या दमनकारी नीतियों का पर्दाफाश कर जन-जागरण फैलाने का कार्य कर रही थीं। लार्ड लिंटन ने इस एक्ट के द्वारा समाचार पत्रों का

मुँह बंद कराने का प्रयास किया। किन्तु इसके प्रतिक्रिया स्वरूप जनमानस में आक्रोश भर गया और उनमें राष्ट्रीयता की भावना और जागृत हुई जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन की गति और तीव्र हुई।

8. शहरीकरण की प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण तत्व है—व्यवसायी वर्ग, मध्यम वर्ग और मजदूर वर्ग।

(i) व्यवसायी वर्ग— नगरीकरण के उद्भव एवं विकास में व्यवसायी वर्ग की भूमिका अहम है। व्यवसायी वर्ग व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र होता है। यह व्यापार की मात्रा में वृद्धि एवं अंतर्क्षेत्रीय व्यापार के विस्तार को स्थापित करता है। अत: इससे व्यवसायिक पूँजीवाद का उदय और विकास होता है। अर्थात मुद्रा प्रधान अर्थ व्यवस्था, विनिमय वितरण, बैंकिंग बीमा इत्यादि से शहरों को नया सामाजिक आर्थिक स्वरूप प्राप्त हुआ।

मध्यम वर्ग— व्यवसायिक क्रांति से पनपे मध्यम वर्ग ने शहरी समाज को एक नया आधार दिया। इस नए मध्यम वर्ग ने उन्हीं नीतियों, कलाओं एवं सामाजिक वर्गों को बढ़ावा दिया जो इस नई अर्थव्यवस्था को और अधिक मजबूत करते थे।

इसका परिणाम यह हुआ कि एक नई आर्थिक प्रक्रिया की शुरूआत के साथ-साथ नई बौद्धिक गतिविधियों की शुरूआत हुई। इस वर्ग में वकील, शिक्षक, दार्शनिक, डॉक्टर लिपिक इत्यादि थे।

श्रमिक वर्ग— फैक्ट्री प्रणाली से शहरों में श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। कारखानों और उद्योगों में रोजगार की तलाश में गाँव से व्यापक संस्था में भूमिहीन कृषक शहर की ओर पलायन किया और वहीं बसने लगे। इनके श्रम पर ही औद्योगिक इकाइयाँ संचालित हुई। लेकिन पूँजीपति वर्ग ने श्रमिकों का शोषण और उत्पीड़न किया। इस प्रकार दोनों वर्गों के बीच हितों का एक आधारभुत संघर्ष शुरू हो गया।

अथवा, भूमंडलीकरण के फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व एक बड़े गाँव के समान हो गया है। ऐसा लगता है कि दुनिया छोटी हो गई और हमारी पहुँच दुनिया के हर हिस्से में हो गई। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप आम लोगों के जीवन में व्यापक परिवर्तन आया है।

भूमंडलीकरण के फलस्वरूप जीविकोपार्जन के कई नये क्षेत्र खुले हैं। इनमें सेवा का विस्तार सर्वाधिक हुआ है। जैसे—टूर एवं ट्रेवल एजेन्सी, बैंक, बीमा, होटल एवं रेस्तरा, कॉल सेन्टर इन्टरनेट कैफे, दूरसंचार एवं सूचना तकनीकी, विडियो, शॉपिंग मॉल, पार्लर आदि इन सभी क्षेत्रों में विदेशी कम्पनियों, फार्मों के आ जाने के बाद इनके क्षेत्र का विस्तार हुआ है। ये कम्पनियाँ विश्व भर में कहीं भी (वर्ल्डवाईड) सेवाएँ देती हैं।

भूमंडलीकरण के फलस्वरूप शिक्षा में भी नए-नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। नए-नए विषय उभरे हैं। इस शिक्षा हेतु दुनिया भर की शिक्षण संस्थाओं तक लोगों की पहुँच बनी है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी भूमंडलीकरण के फलस्वरूप अच्छी-से-अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएँ लोगों को प्राप्त हो रही हैं। नई-से-नई तकनीक आज लोगों तक पहुँच रही है।

भूमंडलीकरण के फलस्वरूप ही लोगों के पास हर क्षेत्र में विकल्पों की भरमार हो गई है। चाहे उपभोक्ता सामग्री हो, सेवा क्षेत्र हो, शिक्षा या स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, उससे जुड़ी हुई विश्व के तमाम फर्म या समस्या लोगों के समक्ष उपलब्ध है।

इस प्रकार भूमंडलीकरण के फलस्वरूप आम लोगों को काफी लाभ हुआ है। उनका जीवन सुविधापूर्ण हो गया है। दुनिया के किसी भी भाग में उन्हें अपने पसंद के उत्पाद मिल जाते हैं। बैंक एवं बीमा कम्पनियाँ मिल जाती हैं। वस्तुतः भूमंडलीकरण के कारण व्यक्ति अपने आपको पूरे विश्व का नागरिक समझने लगा है।

9. (घ)

10. (क)

12. मानव ने विकास के नाम पर संसाधनों का अविवेकपूर्ण तथा अति उपयोग किया है जिसके कारण कई सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इसके अलावा, कई खनिज संसाधन समाप्ति के कगार पर है। जबकि मानवीय विकास की गति अभी भी जारी है। संसाधनों के अविवेकपूर्ण उपयोग के कारण मानव जीवन ही संकट में पड़ता जा रहा है। अतः, सतत पोषणीय विकास की दृष्टि से संसाधनों का संरक्षण जरूरी है।

13. हमारे देश में कृषि अर्थ तंत्र, अधिवास तथा सामाजिक, सांस्कृतिक क्रियाकलापों की आधारशिला है। कुल राष्ट्रीय आय का लगभग 50% कृषि से ही प्राप्त होता है। भारत की 63% जनसंख्या कृषि से सीधी जुड़ी हुई है। कृषि से ही 28 करोड़ पशु जुड़े हुए है। जो कृषि की सहायता के साथ कई उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन भी करते हैं। भारत में कृषि का महत्व कई कारणों से है जो निम्न है—

(i) भारत में लगभग 50% लोगों की जीविका कृषि पर आधारित है।

(ii) भारत की विशाल जनसंख्या के लिए भोजन कृषि से ही प्राप्त होता है।

(iii) कई उद्योगों के कच्चे माल कृषि से ही प्राप्त होते हैं। जैसे चीनी उद्योग, वस्त्र उद्योग।

(iv) चाय, गन्ना, मोटे अनाज एवं कुल तिलहनों के उत्पादन में भारत विश्व में अग्रणी है और चावल, जूट, तम्बाकू, गेहूँ कपास आदि फसलों के उत्पादन में इसे दूसरा स्थान प्राप्त हो।

(v) देश की 24% आय कृषि से होती है।

14. जलोढ़ मृदा—. यह मृदा भारत में विस्तृत रूप से फैली हुई सर्वाधिक महत्वपूर्ण मृदा है। उत्तर भारत का मैदान पूर्णतः जलोढ़ निर्मित है, जो हिमालय की तीन महत्वपूर्ण नदी प्रणालियों सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र लाए गए जलोढ़ के निक्षेप से बना है। राजस्थान एवं गुजरात में भी एक पट्टी के रूप में इस मृदा का प्रसार है। पूर्वी तटीय मैदान स्थित महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी नदियों द्वारा निर्मित डेल्टा का भी निर्माण जलोढ़ से ही जुड़ा है। यह मिट्टी गन्ना, चावल, गेहूँ, मक्का, दलहन जैसी फसलों के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

15. चाय उत्पादन के लिए प्रमुख भौगोलिक दशाएँ इस प्रकार है—चाय उष्ण तथा उपोषण कटिबंधीय पौधा है जिसके लिए 25°C से 30°C तापमान आवश्यक है तथा 200 – 250 सेमी० वर्षा आवश्यक है। इसके लिए ढालुवाँ जमीन की आवश्यकता होती है। ताकि इस पौधे की जड़ में पानी का जमाव नहीं हो। पत्तियों के निरंतर विकास के लिए आर्द्रता समान रूप से सालोभर वितरित रहना चाहिये। सुबह का कुहासा और प्रतिदिन की बौछार पत्तियों की उपज में अत्यंत आवश्यक है। इसकी मिट्टी सुप्रवाहित एवं उर्वरक होना चाहिए। मिट्टी में फॉस्फोरस, पोटाश, लोहा तथा ह्यूमस पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए।

झाड़ियों की सफाई एवं कटाई के लिए काफी मानव श्रम की आवश्यकता होती है। चाय की ताजगी को बनाए रखने के लिए इसे बगान में ही संशोधित किया जाता है।

अथवा,

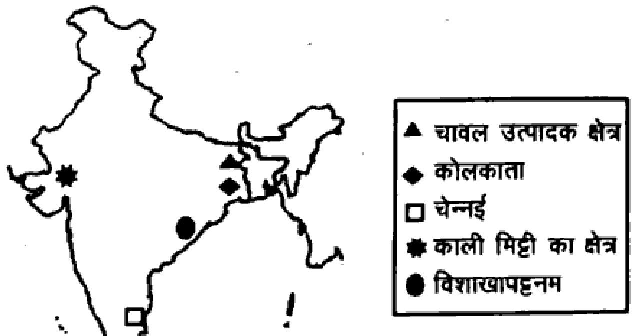

अथवा, नेत्रहीन छात्र के लिए—चाय भारत की महत्वपूर्ण पेय फसल है। इस फसल के उत्पादन में विश्व में भारत का स्थान दुसरा है। चाय की खपत में भारत का स्थान विश्व में प्रथम है। यह एक रोपन कृषि है। सबसे पहले अंग्रेजों द्वारा इसकी खेती ब्रह्मपुत्र की घाटी में 1840 ई. में आरंभ किया गया था। यह प्रदेश आज भी देश का प्रमुख चाय उत्पादक क्षेत्र है।

भारत में असम की ब्रह्मपुत्र एवं सुरमा घाटी, पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग तथा जलपाईगुड़ी की पहाड़ियों एवं तमिलनाडू में नील गिरी की पहाड़ियों पर हलकी खेती होती है। गौण क्षेत्र के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मेघालय, त्रिपुरा, आंध्रप्रदेश इत्यादि राज्यों में चाय की खेती होती है भारत विश्व का अग्रणी चाय उत्पादक एवं निर्यातक देश है।

16. (ख), **17.** (घ)

18. धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ यह है कि उस राज्य में धर्म के आधार पर किसी भी प्रकार की भेद भाव नहीं होना चाहिए तथा किसी भी व्यक्ति के स्वेच्छा के साथ अपने धर्म में विश्वास रखने की पूर्ण आजादी दी जानी चाहिए। वहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई इत्यादि धर्मों में किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं होना चाहिए तथा सभी धर्मों को समान रूप में देखा जाना चाहिए।

19. लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें जनता सर्वोपरि होती है। अब्राहम लिंकन की सर्वमान्य एवं सरल परिभाषा से लोकतंत्र की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है। लोकतंत्र जनता का, जनता द्वारा तथा जनता के लिए शासन है। स्पष्ट है कि जनता अपने प्रतिनिधि के द्वारा शासन चलाती है। ये प्रतिनिधि जनता के बीच के होते हैं जिनका चुनाव जनता वयस्क मताधिकार पद्धति से करती है। चुनकर आये जनप्रतिनिधि सरकार को गठित करते हैं तथा सरकार में शामिल या विपक्ष में बैठकर जनकल्याणकारी नीतियाँ, कार्यक्रम आदि जनता के हित में बनाते हैं।

अतः भारत में हम लोकतंत्र के भविष्य को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं।

20. देखें 2014(A) द्वितीय पाली प्रश्न सं॰ 19 अथवा का उत्तर।

21. राजनीतिक दल के प्रमुख कार्य निम्नलिखित है—

(i) जनता को शिक्षित करना—आज के राजनैतिक माहौल में जनता की राजनीति का ज्ञान होना आवश्यक है। राजनीतिक मामलों में जनता को शिक्षित करने का काम राजनीतिक दल ही करते हैं। वे अपना कार्यक्रम नीति और दृष्टिकोण जनता के सामने रखते हैं।

(ii) जनमत का निर्माण—राजनीतिक दल का मुख्य कार्य जनता का भी निर्माण करना है। जनता के सामने तरह-तरह के नारे देते हैं जिससे जनता देश की राजनीतिक समस्याओं पर अपना मत निश्चित कर पाती है।

(iii) निर्वाचन में भाग लेना—राजनीतिक दलों का मुख्य कार्य चुनाव में भाग लेना है। चुनाव में वे अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं तथा अधिक से अधिक सीट जीतकर सरकार का निर्माण करते हैं।

(iv) शासन चलाना—राजनीतिक दल देश के शासन में मुख्य रूप से भाग लेते हैं। जिस राजनीतिक दल की सरकार बनती है उसे सत्तारूढ़ दल कहा जाता है। लोकतांत्रिक सरकार को राजनीतिक दल की सरकार के नाम से पुकारा जाता है।

(v) सरकार की आलोचना करना— विपक्षी दल सरकार की आलोचना करते हैं।

(vi) जनता की शिकायत सुनना— राजनीतिक दल जनता की शिकायत भी सुनते हैं।

(vii) अनुशासन कायम रखना— राजनीतिक दल का एक मुख्य कार्य यह भी है कि अपने सदस्यों के बीच अनुशासन भी कायम रखे।

अथवा, शिक्षा का अभाव निश्चित तौर पर लोकतंत्र के लिए बड़ी चुनौती है। भारतीय लोकतंत्र ने शिक्षा के मुद्दे को गंभीरता से लिया—शिक्षा को कई आयोगों के हवाले किया गया। भारतीय संविधान ने 14 वर्ष तक की शिक्षा को अनिवार्य एवं नि:शुल्क घोषित कर दिया। शिक्षा

ने सर्वशिक्षा अभियान से होती हुयी शिक्षा के अधिकार तक की यात्रा तय कर ली। शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार ने आम जनता में जागरूकता उत्पन्न कर दी। जनता अपने मतों का महत्व समझने लगी, सत्ता में भागीदारी तथा हिस्सेदारी की प्रक्रिया को समझने लगी, उसमें रुचि लेने लगी। 15वीं लोकसभा चुनाव में मतदाताओं ने जिस प्रकार आपराधिक छवि वाले उम्मीदवारों को नकार दिया है, उनके जागरूक होने का परिचायक है। जनता की समझ बनने लगी है कि वह ही शक्तिशाली है—गद्दी पर बिठा सकती है या उखाड़ सकती हैं।

22. (ख), **23.** (क)

24. कुल घरेलु उत्पाद या सकल घरेलु उत्पाद एक देश की भौगोलिक सीमाओं के अंदर एक लेखा वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है।

25. बचत प्राप्त आय में से उपभोग को घटाने पर प्राप्त होता है। बचत आय-उपभोग बचत दो प्रकार का होता है—नगद बचत तथा वस्तु संचय। आय का कुछ हिस्सा ऐसा भी होता है जो ऐसे वस्तुओं पर खर्च किया जाता है, जिसे रखा जा सके। इस प्रकार वह वस्तु संचय का माध्यम है। किन्तु कुछ ऐसा संचय या बचत जो वस्तु के रूप में नहीं होता संचय या नकद बचत है।

बचत करने की इच्छा आदमी के भविष्य में उस राशि से कोई कार्य करना, या आपत्तिजनक स्थिति उत्पन्न होने पर काम आना या अपने भविष्य निधि के सोच पर निर्भर करता है।

26. आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के संचालन में साख की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आजकल प्राय: सभी प्रकार की उत्पादक क्रियाओं के लिए वित्त या साख की आवश्यकता होती है। वित्तीय संस्थाओं के अन्तर्गत बैंक, बीमा कंपनी, सहकारी समितियों तथा महाजन साहुकार इत्यादि देशी बैंकों को सम्मिलित किया गया है। जो साख के आधार पर ऋण लेन देन का कार्य करती है।

वित्तीय संस्थान दो प्रकार के होते हैं—

(i) संगठित क्षेत्र की संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ।

(ii) असंगठित क्षेत्र की गैर संस्थागत संस्थाएँ।

27. बिहार के आर्थिक पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण हैं—

(i) तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या— बिहार में जनसंख्या काफी तेजी से बढ़ रही है। इसके चलते विकास के लिए साधन कम हो जाते हैं। अधिकांश साधन जनसंख्या के भरण-पोषण में चला जाता है।

(ii) आधारिक संरचना का अभाव—किसी भी देश या राज्य के विकास के लिए आधारिक संरचना का होना आवश्यक है। लेकिन बिहार इस मामले में काफी पीछे है। राज्य में सड़क, बिजली एवं सिंचाई का अभाव है। साथ ही शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ भी कम हैं। इस वजह से बिहार में पिछड़ेपन की स्थिति कायम है।

(iii) कृषि पर निर्भरता— बिहार की अर्थव्यवस्था पूरी तरह कृषि पर निर्भर है। यहाँ की अधिकांश जनता कृषि पर ही निर्भर है।

(iv) बाढ़ तथा सूखा से क्षति— बिहार में खासकर उत्तरी बिहार में नेपाल से आये जल से बाढ़ आती है। हर साल बाढ़ का आना लगभग तय है। इससे जान-माल की काफी क्षति होती है। हाल के कोसी का प्रलय इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इसी तरह सूखे की मार दक्षिणी बिहार को झेलनी पड़ती है। इससे हमारे किसानों को अकाल जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है।

(v) औद्योगिक पिछड़ापन— किसी भी देश या राज्य के लिए उद्योगों का विकास जरूरी होता है। यहाँ के सभी खनिज क्षेत्र एवं बड़े उद्योग तथा प्रतिष्ठित अभियांत्रिकी संस्थाएँ सभी झारखण्ड में चले गए। इस कारण बिहार में कार्यशील औद्योगिक इकाइयों की संख्या नगण्य रह गई है।

(vi) गरीबी— बिहार में गरीबी का भार सर्वाधिक है। राज्य में प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत के आधे से भी कम है। इसके चलते भी बिहार पिछड़ा है।

(vii) खराब विधि-व्यवस्था— किसी भी देश या राज्य के लिए शांति तथा सुव्यवस्था जरूरी होती है। लेकिन बिहार में वर्षों से कानून-व्यवस्था कमजोर स्थिति में थी जिसके चलते उद्योग व निवेश को प्रोत्साहन नहीं मिल सका। इस खराब विधि-व्यवस्था के कारण बिहार एक पिछड़ा राज्य बन गया।

(viii) कुशल प्रशासन का अभाव— बिहार की प्रशासनिक स्थिति ऐसी हो गई है जिसमें पारदर्शिता का अभाव है। सारा प्रशासनिक तंत्र भ्रष्टाचार के दलदल में डूबा है जिसके कारण बिहार का विकास नहीं हो पा रहा है।

बिहार के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं—

(i) जनसंख्या पर नियंत्रण— राज्य में तेजी से बढ़ती हुए जनसंख्या को नियंत्रित कर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाया जाए। इसके लिए राज्य में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को शिक्षित किया जाए।

अथवा, उपभोक्ता के निम्नलिखित अधिकार है—

(i) सुरक्षा का अधिकार— उपभोक्ता का प्रथम अधिकार सुरक्षा का अधिकार है। इस अधिकार का सीधा संबंध बाजार से खरीदी जानेवाली वस्तुओं और सेवाओं से जुड़ा है।

(ii) सूचना प्राप्त का अधिकार— उपभोक्ता को वे सभी आवश्यक सुचनाएँ भी प्राप्त करने का अधिकार है जिसके आधार पर वह वस्तु या सेवाएँ खरीदने का निर्णय कर सकते हैं। जैसे पैकेट बंद समान खरीदने पर उसका मूल्य इस्तेमाल करने की अवधि गुणवत्ता इत्यादि।

(iii) चुनाव करने का अधिकार— उपभोक्ता को अपने अधिकार के अन्तर्गत विभिन्न निर्माताओं द्वारा निर्मित विभिन्न ब्रांड, किस्म, गुण रूप, रंग, आकार तथा मूल्य की वस्तुओं में से किसी भी वस्तु को चयन करने की पूर्ण आजादी है।

(iv) प्रस्तुत करने का अधिकार— उपभोक्ता को अपने हितों को प्रभावित करनेवाली सभी बातों को उपयुक्त मंचों के समक्ष प्रस्तुत करने का अधिकार हो।

(v) शिकायत निवारण या क्षतिपूर्ति का अधिकार— यह अधिकार लोगों को आवश्वासन प्रदान करता है कि क्रय की गई वस्तु या सेवा उचित ढंग की नहीं निकली तो उन्हें मुआवजा दिया जाएगा।

(vi) उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार— उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार के अन्तर्गत किसी वस्तु के मूल्य, उसकी उपयोगिता, कोटि तथा सेवा की जानकारी एवं अधिकारों से ज्ञान प्राप्ति की सुविधा जैसी बातें आती हैं, जिसके माध्यम से शिक्षित उपभोक्ता धोखाधड़ी, दगाबाजी से बचने के लिए स्वयं सबल, संरक्षित एवं शिक्षित हो सकते हैं एवं उचित न्याय के लिए खड़े हो सकते हैं।

उपभोक्ता के अधिकार की रक्षा एवं हितों का संरक्षण करने के लिए सरकारी स्तर पर केन्द्रीय उपभोक्ता संरक्षण परिषद एवं राज्य स्तर पर राज्य उपभोक्ता संरक्षण परिषद की स्थापना की गई है।

28. (घ), **29.** (क)

30. मौनसून की अनिश्चितता के कारण बिहार के किसी-न-किसी भाग में प्रतिवर्ष बाढ़ का आगमन होता है। बिहार की कोसी बाढ़ की विभीषिका के लिए बदनाम है। उत्तरी बिहार के मैदान बाढ़ से अधिक प्रभावित हैं। उत्तरी बिहार में बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में सारण, गोपालगंज, वैशाली, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, सहरसा, खगड़िया, दरभंगा, मधुबनी इत्यादि हैं। इन क्षेत्रों में मुख्यतः घाघरा, गंडक, कमला, बागमती और कोसी नदियों से बाढ़ आती है। उत्तरी बिहार की बाढ़ से बचाव के निम्नलिखित उपाय हैं—

(i) नदियों पर बाँध बनाना, (ii) नदियों के किनारे मजबूत कंक्रीट एवं ऊँचा तटबंध बनाना।

●●●